Subject :- Sociology Date :- 08/07/2020 (1)
Class :- D-I (H) Paper :- 2nd
Topic :- मैक्स वेबर के प्रोटेस्टेन्ट सम्बन्धी सिद्धान्त

By :- Dr. Shyamanand Choudhary
Guest Teacher, Marwari College, Darbhanga

प्रोटेस्टेन्ट सिद्धान्त

online Study Material No :- 101

Max Weber ने समाज के क्षेत्र में अनेक सिद्धान्तों तथा अवधारणाओं का प्रतिपादन किया जिनमें धर्म के समाजशास्त्र का सिद्धान्त (Theory of Sociology of Religion) अपना महत्वपूर्ण स्थान रखता है। इस सिद्धान्त में वेबर ने इस समस्या पर विचार किया कि धर्म और आर्थिक सामाजिक घटनाओं में क्या सम्बन्ध है। वेबर के अनुसार सामाजिक घटनाएँ किसी एक कारण का परिणाम नहीं होती है। Marx ने बताया था कि समस्त सामाजिक व्यवस्था आर्थिक कारक से निर्देशित तथा नियंत्रित होती है किन्तु Weber ने इसे नहीं मानता है। वेबर ने सामाजिक परिवर्तन का मुख्य कारक धर्म को माना है किन्तु वह धर्म को सामाजिक परिवर्तन का एकमात्र कारक नहीं मानता है। वेबर ने कहा है कि धार्मिक घटनाएँ एक-दूसरे से सम्बन्धित हैं और एक-दूसरे पर आश्रित हैं अर्थात दोनों एक-दूसरे को प्रभावित करती है। किन्तु इन्होंने यहाँ इतना अवश्य बताया है कि जितनी अधिक धार्मिक घटनाएँ आर्थिक घटनाओं को प्रभावित करती है उतना आर्थिक घटनाएँ धार्मिक घटनाओं को प्रभावित नहीं करती है। यही कारण है कि Max Weber ने पूँजीवाद के विकास का आधार प्रोटेस्टेण्ट नैतिकता को बताया है।

1. वेबर की मान्यता है कि धार्मिक और आर्थिक घटनाएँ एक-दूसरे पर आधारित है तथा एक-दूसरे पर महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ता है। सामाजिक व्यवस्थाओं का संचालन तथा नियंत्रण न केवल धार्मिक कारकों द्वारा तथा न केवल आर्थिक कारकों द्वारा होता है। वस्तुतः सामाजिक व्यवस्था का संचालन धार्मिक तथा आर्थिक दोनों तत्वों द्वारा होता है।
2. सामाजिक घटना की विवेचना के लिए किसी एक तत्व को परिवर्तनीय माना जा सकता है। वेबर ने धार्मिक तत्व को परिवर्तनीय मानकर उसका आर्थिक व्यवस्थाओं पर प्रभाव ज्ञात करने का प्रयत्न किया है।
3. Max Weber ने धर्म के समाजशास्त्र को समझने के लिए आदर्श प्रारूपों का व्यापक अध्ययन किया।

Max Weber ने पूँजीवाद और प्रोटेस्टेन्ट धर्म के परस्पर सम्बन्धों की विस्तृत व्याख्या अपनी प्रसिद्ध पुस्तक "Protest

Ajanta Oxford
Scanned with CamScanner

Ethics and the spirit of Capitalism" में किया है। इस पुस्तक में उन्होंने स्पष्ट किया है कि प्रोटेस्टेन्ट धर्म की नैतिकता ने ही आर्थिक क्षेत्र में पूँजीवाद को जन्म दिया है। साथ ही इन्होंने यह भी कहा कि यदि पश्चिमी देशों में प्रोटेस्टेन्ट धर्म का विकास न हुआ होता तो पूँजीवाद का रूप कुछ और ही होता। प्रोटेस्टेन्ट धर्म और पूँजीवाद के सम्बन्ध को प्रमाणित करने के लिए वेबर ने इन दोनों के आदर्श प्रारूपों का चयन किया है। आधुनिक पूँजीवाद के कुछ प्रमुख लक्षण इस प्रकार हैं :- इस व्यवस्था के अन्तर्गत उद्योग, व्यापार और वाणिज्य बड़े पैमाने पर बिल्कुल वैज्ञानिक आधार पर विवेकपूर्ण ढंग से संगठित तथा संचालित होता है। निजी सम्पत्ति सम्पूर्ण व्यवस्था का सर्व प्रमुख अंग होती है। उत्पादन कार्य बड़ी-बड़ी मिलों तथा कारखानों में अधिक लोगों की सहायता से मशीनों द्वारा होता है।

प्रोटेस्टेन्ट धर्म से प्रभावित नेताओं ने कुछ इस तरह का विचार प्रस्तुत किया जिससे पूँजीवादी व्यवस्था उत्पन्न हुयी। वेबर का कहना है कि प्रोटेस्टेन्ट धर्म की मान्यतायें पूँजीवाद के विकास से सहमत होकर ही फ्रेंकलिन ने यह उपदेश दिया कि (i) समय ही धन है। (ii) धन से धन कमाया जाता है। (iii) एक पैसा बचाना एक पैसा कमाना है। (iv) सबसे अच्छी निति ईमानदारी है। (v) जल्दी सोना व जागना व्यक्ति को स्वस्थ, धनी और बुद्धिमान बनाता है। (vi) व्यवसाय में वैज्ञानिक लेखा-जोखा और प्रबन्ध करना आवश्यक है। (vii) ईमानदारी, परिश्रम, कार्यकुशलता, सत्यता, सच्चाई, बफादारी और विश्वास आदि तत्व किसी भी क्षेत्र में सफलता प्राप्त करने के लिए आवश्यक है। (viii) कार्य करना ही सबसे बड़ा गुण है।

उपरोक्त उपदेशों के कारण लोगों में धन संचय की प्रवृत्ति विकसित हुयी और पूँजीवाद का जन्म हुआ। पूँजीवाद में व्यक्तियों का सर्वप्रथम उद्देश्य अधिकतम लाभ प्राप्त करना होता है। इस उद्देश्य की पूर्ति करने की प्रेरणा फ्रेंकलिन के उपदेशों से प्राप्त हुयी। पूँजीवादी व्यवस्था की यह प्रेरणा वेबर के प्रोटेस्टेन्ट नैतिकता के इस विचार से मिली कि काम करना ही सबसे बड़ा गुण है तथा कर्म ही पूजा है। पूँजीवाद के विकास में प्रोटेस्टेन्ट धर्म का योगदान इस प्रकार है:-

1. प्रोटेस्टेन्ट धर्म की मान्यता यह है कि कोई व्यक्ति अपने

व्यवसाय में कठिन परिश्रम करके अधिकाधिक सफलता प्राप्त करता है तो मरणोपरान्त वह सीधा स्वर्ग में पहुँच जाता है। प्रोटेस्टेन्ट धर्म के अनुसार मोक्ष की प्राप्ति चर्च में जाने या तीर्थयात्रा करने से नहीं होती बल्कि अपने व्यवसाय के प्रति पूर्ण योग्यता और सतर्कता से कार्य करने से होती है।

2. इस धर्म की दूसरी मान्यता यह है कि 'पैसा ही पैसा को पैदा करता है।' इस मान्यता के आधार पर कर्ज पर ब्याज प्राप्त करना नैतिक माना गया है। पूँजीवादी व्यवस्था के विकास में इस मान्यता का महत्वपूर्ण योगदान है।

3. प्रोटेस्टेन्ट धर्म का पूँजीवाद के विकास में तीसरा योगदान यह है कि इसमें नशाखोरी को बुरा कहा गया है तथा ईमानदारी को सर्वोच्च स्थान दिया गया है। शराबखोरी पर प्रतिबन्ध ने पूँजीवादी आर्थिक व्यवस्था में अत्यधिक महत्व प्रदान किया है।

4. प्रोटेस्टेन्ट धर्म की चौथी मान्यता यह है कि ईश्वर को प्रसन्न करने के लिए निरन्तर कार्य करते रहना चाहिए।

Max Weber ने कुछ ऐतिहासिक प्रमाणों के आधार पर आर्थिक तथा धार्मिक क्रियाओं का सम्बन्ध स्पष्ट करने का प्रयास किया है। उन्होंने कहा है कि इंग्लैण्ड, अमेरिका, हॉलैण्ड इत्यादि देशों में पूँजीवाद पूर्ण रूप से देखने को मिलता है। इसका कारण यह है कि उन देशों में प्रोटेस्टेन्ट धर्म के समर्थक अधिक हैं। इससे स्पष्ट है कि पूँजीवादी का विकास उन्हीं देशों में हो सका जहाँ प्रोटेस्टेन्ट धर्म के मानने वाले अधिक हैं।

विश्व के प्रमुख धर्मों का अध्ययन करके वेबर ने यह निष्कर्ष निकाला कि धर्म प्रमुख रूप से आर्थिक संगठन का निर्धारक तत्व है। इसके विपरित मार्क्स का कहना है कि आर्थिक कारक धर्म के स्वरूप का निर्धारक तत्व है। मार्क्स ने आर्थिक व्यवस्था को धर्म, नैतिकता और सामाजिक संरचना का निर्णायक कारक माना है, जबकि वेबर के अनुसार जब धार्मिक संरचना में परिवर्तन होता है तो सम्पूर्ण विचार में परिवर्तन आ जाता है और उसी के अनुसार आर्थिक नियम और व्यवस्था भी परिवर्तित हो जाते हैं। वेबर का कहना है कि आर्थिक संगठन के सामाजिक जीवन में धर्म का विशिष्ट स्थान है जबकि मार्क्स धर्म को जनता के लिए हफीमसमझते हैं तथा प्रगति के मार्ग में बाधक करार देते हैं। इसप्रकार

Scanned with CamScanner

(A)

वेबर और मार्क्स के सिद्धान्त एक-दूसरे के विरोधी हैं। यद्यपि वेबर का सिद्धान्त व्यावहारिक तथा युक्ति संगत है। तथापि इसकी आलोचना की गई है। वेबर की यह मान्यता है कि प्रोटेस्टेन्ट नैतिकता ने पूँजीवाद को जन्म दिया है। यह विचार सही नहीं मालूम पड़ता है कि धर्म एवं आर्थिक व्यवस्था एक-दूसरे से अन्तः सम्बन्धित है।

S.N. Choudhary

Guest Teacher, Marwari College, Darbhanga

Scanned with CamScanner